वीरांगना आशा गुर्जर

19.11.1829 – 14.05.1857

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : आशादेवी गुजरी - विकिपीडिया
सुगत सांस्कृतिक शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ,(उ.प्र.) – 19.11.2020
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए के सिंह
मोबा : 7355175480

बंधुओं,

जय संविधान, जय विज्ञान, जय लोकतंत्र, जय भारत, नमो बुद्धाय, जय भीम :

(इस करोना काल में हम लोग केवल फेसबुक व्हाट्सएप के माध्यम से ही बात कर सकते हैं। जैसा कि आप सभी लोग जानते हैं कि मैं सामाजिक विषयों और हमारे महापुरुषों पर, बहादुर महिलाओं पर, नाटकों के सजीव मंचन करती रहती हूं। लेकिन इस कोविड-19 के कारण, यह सब करना संभव नहीं है। मुझे 24 मार्च 2020 को पेरियार ललई सिंह की मां मुला देवी और पिता चौधरी गज्जू सिंह यादव के जीवन चरित्र पर सजीव नाटक मंचन करना था। तथा 11 अप्रैल 2020 को जनसेवक गाडगे बाबा की मां सखूबाई के जीवन चरित्र पर नाटक का मंचन करना था जो कोविड-19 के चलते नहीं हो पाए। तो मैंने सोचा कि अभी पता नहीं कब तक करोना काल चलेगा, तो आप लोगों से फेसबुक के ही माध्यम से रूबरू हो लेते हैं। इसलिए मैं आज, 1857(अट्ठारह सौ सत्तावन) क्रांति की पहली महिला वीरांगना आशा देवी गुजरी यानी कि आशा गुर्जर के जीवन चरित्र पर, एक कहानी के माध्यम से आप लोगों के साथ में अपने अनुभव साझा करूंगी)

नोट : आशा गुर्जर के नाम से लड़कियों को बहादुरी के पुरस्कार घोषित किए जाने चाहिए, 19 नवंबर को जन्मदिवस और 14 मई को निर्वाणदिवस मनाया जाना चाहिए। जैसे : राजस्थान सरकार ने "प्रथम शिक्षिका राष्ट्रमाता सावित्रीबाई फुले और क्रांतिज्योती राष्ट्रपिता ज्योतिबाफुले" को सम्मान दिया,

मृत्युभोज जैसी कुरीति को खत्म करने का शासनादेश लाया। दिल्ली सरकार ने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य कर विज्ञानवाद को स्थापित किया।

आशा देवी गुजरी 'गुर्जर'

1857(अट्ठारह सौ सत्तावन) क्रांति की प्रथम महिला वीरांगना, आशा गुर्जर का जन्म 19 नवंबर 1829 को पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर, जो कि अब शामली जिला है, की एक आम महिला थी। यह सिर्फ 28 साल की कम उम्र में अंग्रेजी साम्राज्य की सेना से लड़ते हुए, 14 मई 1857 को कैराना उत्तर प्रदेश में वीरगति को प्राप्त हो गई थी।

इतिहास की पुस्तकें कहती हैं, कि 1857 की क्रांति की शुरुआत 10 मई 1857 की संध्या को मेरठ से हुई थी। और इसलिए समस्त भारतवासी 10 मई को प्रत्येक वर्ष क्रांतिदिवस के रूप में मनाते हैं। क्रांति की शुरुआत करने का श्रेय, सदर कोतवाली मेरठ के कोतवाल, अमर शहीद धन सिंह गुर्जर को जाता है।

1857 की क्रांति के कुछ समय पूर्व की एक घटना ने भी धन सिंह गुर्जर और ग्राम वासियों को अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए प्रेरित किया। पांचली और उसके निकट के ग्रामों में प्रचलित कहावतों के अनुसार : अप्रैल का महीना था, किसान अपनी फसलों को उठाने में लगे हुए थे। एक दिन करीब 10-11 बजे के आसपास दो अंग्रेज तथा एक अंग्रेजी मैम, गांव पांचली खुर्द के आमों के बाग में थोड़ा आराम करने के लिए रुके। इसी बाग के समीप पांचली गांव के 3 किसान, जिनके नाम : मंगत सिंह, नरपत सिंह और झज्जर सिंह थे। सभी अपने अपने खेती-बाड़ी कार्यों में लगे हुए थे, अंग्रेजो ने इन किसानों से पानी पिलाने का आग्रह किया। उसके बाद पता नहीं क्या हुआ, कि अचानक इन किसानों और अंग्रेजों में संघर्ष हो गया। इन किसानों ने अंग्रेजों का वीरता पूर्वक सामना कर एक अंग्रेज और मैम को पकड़ लिया। एक अंग्रेज भागने में सफल रहा। पकड़े गए अंग्रेज सिपाही को इन्होंने हाथ पैर बांधकर गर्म रेत में डाल दिया। और अंग्रेजी मेम से बलपूर्वक दांय चलवाई। दांय चलाना जानते हैं न, "जब फसल पककर सूख जाती है, तो उसको माड़ना होता है, यानी कि भूसा और अनाज को अलग अलग करना होता है, फसल को काट के

उसको सुखा के जानवरों के माध्यम से उसको को कुचलवाया जाता है, ऐसे भूसा और अन्न अलग अलग हो जाता है।" वही काम अंग्रेजी मेम से करवाया। 2 घंटे बाद भागा हुआ सिपाही एक अंग्रेजी अधिकारी और 25 सिपाहियों के साथ वापस लौटा। तब तक किसान, अंग्रेज सैनिकों से छीने हुए हथियारों : जिनमें एक सोने की मूठ वाली तलवार भी थी, को लेकर भाग चुके थे। अंग्रेजों की दंड नीति बहुत कठोर थी। इस घटना की जांच करने और दोषियों को गिरफ्तार कर कर अंग्रेजों को सौंपने की जिम्मेदारी धन सिंह गुर्जर के पिता, जो कि उस समय गांव के मुखिया थे, को सौंपी गई। ऐलान किया गया, यदि मुखिया ने तीनों बागियों को पकड़ कर अंग्रेजों को नहीं सौंपा, तो सजा गांववालों और मुखिया को भुगतनी पड़ेगी। इससे डरकर बहुत से गांव वाले गांव छोड़कर भाग गए। और अंत में नरपत सिंह और झज्जर सिंह ने आत्मसमर्पण कर दिया। किंतु मंगत सिंह फरार ही रहे। दोनों किसानों को 30 कोड़े और जमीन से बेदखली की सजा दी गई। फरार मंगत सिंह के परिवार के तीन सदस्यों को गांव के समीप ही फांसी पर लटका दिया गया। धन सिंह गुर्जर के पिता को, मंगत सिंह को न ढूंढ पाने के कारण 6 माह का कठोर कारावास की सजा दी गई। इस घटना ने धन सिंह गुर्जर सहित पांचली के बच्चे बच्चे को विद्रोही बना दिया। जैसे ही 10 मई को मेरठ में सैनिक बगावत हुई, धन सिंह गुर्जर और वहां की जनता ने क्रांति में सहभागिता की शुरुआत कर इतिहास रच दिया।

10 मई 1857 को मेरठ में जो महत्वपूर्ण भूमिका, धन सिंह गुर्जर और उनके अपने ग्राम पांचली के भाई बंधुओं ने निभाई, उसकी पृष्ठभूमि में अंग्रेजों के जुल्म की दास्तां छुपी हुई है। ब्रिटिश साम्राज्य की औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की कृषि नीति का मुख्य उद्देश्य : सिर्फ अधिक से अधिक लगान वसूलना था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अंग्रेजों ने महलवाड़ी व्यवस्था लागू की थी, जिसके तहत समस्त ग्राम से इकट्ठा लगान तय किया जाता था। और मुखिया अथवा लंबरदार, लगान वसूलकर सरकार को देता था। लगान की दरें बहुत ऊंची थीं। और उसे बड़ी कठोरता और निर्दयता से वसूला जाता था। कर न दे पाने पर, किसानों को तरह तरह से बेइज्जत करना, कोड़े मारना और उन्हें जमीनों से बेदखल करना एक आम बात थी। किसानों की हालत बद से बदतर हो गई थी। धन सिंह गुर्जर कोतवाल भी एक किसान परिवार से

संबंधित थे। इसलिए किसानों के इन हालातों से वे बहुत दुःखी थे। धन सिंह गुर्जर के पिता पांचली ग्राम के मुखिया थे। अंग्रेज पांचली के उन ग्रामीणों को, जो किसी कारणवश लगान नहीं दे पाते थे। उन्हें धन सिंह गुर्जर के मुखिया पिता के अहाते में, कठोर सजा दिया करते थे। बचपन से ही इन घटनाओं को देख देखकर, धन सिंह गुर्जर के मन में आक्रोश जन्म लेने लगा था। ग्रामीणों के दिलो-दिमाग में अंग्रेजी सत्ता का विरोध, आग के लावे की तरह धधक रहा था। 1857 की क्रांति में धन सिंह गुर्जर और उनके ग्राम पांचली की भूमिका का विवेचन करते हुए हम यह नहीं भूल सकते, "कि धन सिंह, 'गुर्जर' जाति में जन्मे थे" उनका गांव गुर्जर बहुल था। 1707 ईस्वी में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात, गुर्जरों ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपनी राजनीतिक ताकत काफी बढ़ा ली थी। लढौ़रा, मुंडलाना, टिमली, परीक्षितगढ़, दादरी, समथर-लोहागढ़, कुंजा इत्यादि रियासतें कायम कर वे पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक गुर्जर राज्य बनाने के सपने देखने लगे थे। 1803 में अंग्रेजों द्वारा दोआबा पर अधिकार करने के बाद गुर्जरों की शक्ति क्षीण हो गई थी। गुर्जर मन ही मन अपनी राजनीतिक शक्ति को पुनः पाने के लिए आतुर थे। इस दिशा में प्रयास करते हुए गुर्जरों ने सर्वप्रथम 1824 में कुंजा बहादुरपुर के ताल्लुकदार विजय सिंह और कल्याण सिंह उर्फ कलवा गुर्जर के नेतृत्व में सहारनपुर में जोरदार विद्रोह किए। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गुर्जरों ने इस विद्रोह में प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया। परंतु यह प्रयास सफल नहीं हो सका। 1857 के सैनिक विद्रोह ने उन्हें एक और अवसर प्रदान किया। समस्त पश्चिमी उत्तर प्रदेश में, देहरादून से दिल्ली तक, मुरादाबाद, बिजनौर, आगरा, झांसी तक। पंजाब, राजस्थान से लेकर महाराष्ट्र तक के गुर्जर, स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। हजारों की संख्या में गुर्जर शहीद हुए। और लाखों गुर्जरों को ब्रिटेन के दूसरे उपनिवेशों में खेतिहर मजदूर के रूप में निर्वासित कर दिया गया। इस प्रकार धन सिंह गुर्जर और पांचली, घाट, नंगला और गंगोल गांव के गुर्जरों का संघर्ष, गुर्जरों के देशव्यापी ब्रिटिश विरोध का हिस्सा था। यह तो बस एक शुरुआत भर थी।

10 मई 1857 को, मेरठ में विद्रोही सैनिकों और फोर्स ने, अंग्रेजों के विरुद्ध साझा मोर्चा गठितकर क्रांतिकारी घटनाओं को अंजाम दिया। सैनिकों के विद्रोह की खबर फैलते ही, मेरठ की शहरी जनता और आसपास के गांव विशेषकर : पश्चिमी घाट, नंगला, गंगोल इत्यादि के हजारों ग्रामीण, मेरठ की सदर

कोतवाली क्षेत्र में जमा हो गए। इसी कोतवाली में धन सिंह गुर्जर कोतवाल, यानी कि प्रभारी के पद पर कार्यरत थे। मेरठ की पुलिस बागी हो चुकी थी। धन सिंह गुर्जर कोतवाल, क्रांतिकारी भीड़ यानी कि 'सैनिक, मेरठ के शहरी, पुलिस और किसान,' मे एक प्राकृतिक नेता के रूप में उभरे। उनका आकर्षक व्यक्तित्व, उनका स्थानीय होना, क्योंकि वह मेरठ के निकट स्थित गांव पांचली के रहने वाले थे। पुलिस में उच्च पद पर होना और स्थानीय क्रांतिकारियों का उनको विश्वास प्राप्त होना, कुछ ऐसे कारक थे, जिन्होंने धन सिंह गुर्जर को 10 मई 1857 के दिन, मेरठ की क्रांतिकारी जनता के नेता के रूप में उभरने में मदद की। उन्होंने क्रांतिकारी भीड़ का नेतृत्व किया, और रात 2:00 बजे मेरठ जेल पर हमला कर दिया। जेल तोड़कर 836 कैदियों को छुड़ा लिया, और जेल में आग लगा दी। जेल से छुड़ाए गए कैदी भी क्रांति में शामिल हो गए। उससे पहले पुलिस फोर्स के नेतृत्व में, क्रांतिकारी भीड़ ने पूरे सदर बाजार और कैंट क्षेत्र में क्रांतिकारी घटनाओं को अंजाम दिया। रात में ही विद्रोही सैनिक दिल्ली कूच कर गए, और विद्रोह मेरठ के देहात में फैल गया। मेरठ से क्रांति की शुरुआत हो गई थी। जो सहारनपुर से दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों में फैल गई।

मंगल पांडे 8 अप्रैल, 1857 को बैरकपुर, बंगाल में शहीद हो गए थे। मंगल पांडे ने चर्बी वाले कारतूस के विरोध में, अपने एक अफसर को 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी, बंगाल में, गोली से उड़ा दिया था। जिसके पश्चात उन्हें गिरफ्तार कर, बैरकपुर, बंगाल में, 8 अप्रैल को फांसी दे दी गई थी। लेकिन 10 मई 1857 को, मेरठ में हुए जनक्रांति के विस्फोट से, उनका कोई संबंध नहीं है।

क्रांति के दमन के पश्चात ब्रिटिश सरकार ने, 10 मई 1857 को मेरठ में हुई क्रांतिकारी घटनाओं में पुलिस की भूमिका की जांच के लिए मेजर विलियम्स की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की गई। मेजर विलियम्स ने उस दिन की घटनाओं का, भिन्न-भिन्न गवाहियों के आधार पर गहन विवेचन किया। तथा इस संबंध में एक स्मरण पत्र तैयार किया। जिसके अनुसार उन्होंने मेरठ में, जनता की क्रांतिकारी गतिविधियों के विस्फोट के लिए, धन सिंह गुर्जर को मुख्य रूप से दोषी ठहराया। उनका मानना था, अगर धन सिंह गुर्जर ने अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह ईमानदारी से किया होता, तो संभवतः मेरठ में जनता को

भड़कने से रोका जा सकता था। धन सिंह गुर्जर कोतवाल को पुलिस नियंत्रण के छिन्न-भिन्न हो जाने के लिए दोषी पाया गया। क्रांतिकारी घटनाओं से दमित लोगों ने, अपनी गवाहियों में सीधे आरोप लगाते हुए कहा, 'कि, धन सिंह कोतवाल क्योंकि स्वयं गुर्जर हैं, इसलिए उन्होंने क्रांतिकारियों को, जिसमें गुर्जर बहुत संख्या में थे, उनको नहीं रोका। उन्होंने धन सिंह गुर्जर पर क्रांतिकारियों को खुला संरक्षण देने का आरोप भी लगाया। एक गवाही के अनुसार क्रांतिकारियों ने कहा, कि धन सिंह गुर्जर कोतवाल ने उन्हें स्वयं आस-पास के गांव से बुलवाया है। यदि मेजर विलियम्स द्वारा ली गई गवाहियों को, स्वयं विवेचन किया जाए, तो पता चलता है कि, 10 मई 1857 को मेरठ की क्रांति स्वत: विस्फोट नहीं, वरन एक पूर्व योजना के तहत, एक निश्चित कार्रवाई थी। जो परिस्थितिवश समय पूर्व ही घटित हो गई। धन सिंह गुर्जर ने योजना के अनुसार, बड़ी चतुराई से ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार पुलिस कर्मियों को कोतवाली के भीतर चले जाने और वहीं रहने का आदेश दिया। आदेश का पालन करते हुए, अंग्रेजों के वफादार पुलिसकर्मी हिंसा के दौरान कोतवाली में ही बैठे रहे। इस प्रकार अंग्रेजों के वफादारों की तरफ से क्रांतिकारियों को रोकने का कोई प्रयास नहीं हो सका। दूसरी तरफ धन सिंह गुर्जर ने क्रांतिकारी योजना से सहमत सिपाहियों को, क्रांति में अग्रणी भूमिका निभाने का आदेश दिया। फलस्वरूप कई जगह पुलिस वालों को, क्रांतिकारियों की भीड़ का नेतृत्व करते देखा गया। धन सिंह गुर्जर अपने गांव पांचली और आसपास के क्रांतिकारी गुर्जर बहुल गांव : घाट, नंगला, गंगोल आदि की जनता के संपर्क में थे। धन सिंह कोतवाल का संदेश मिलते ही, हजारों की संख्या में गुर्जर क्रांतिकारी रात में ही मेरठ पहुंच गए। मेरठ के आसपास के गांव में प्रचलित कहावतों के अनुसार, इस क्रांतिकारी भीड़ ने धन सिंह गुर्जर के नेतृत्व में, देर रात 2:00 बजे जेल तोड़कर 836 कैदियों को छुड़वा लिया और जेल को आग लगा दी। मेरठ शहर और कैंट में जो कुछ भी अंग्रेजों से संबंधित था, उसे ये क्रांतिकारियों की भीड़, पहले ही नष्ट कर चुकी थी।

समस्त पश्चिम उत्तर प्रदेश के बंजारों, रांघड़ों और गुर्जर किसानों ने, 1857 की क्रांति में व्यापक स्तर पर भाग लिया। पूर्वी उत्तर प्रदेश में ताल्लुकेदारों ने अग्रणी भूमिका निभाई। बुनकरों और कारीगरों ने अनेक स्थानों पर क्रांति में भाग लिया। जिसकी बहादुरी का इतिहास झलकारी बाई कोरी यानी झलकारी बाई

कोली नाम की वीरांगना में देख सकते हैं। 1857 की गदर मात्र एक सैनिक विद्रोह ही नहीं, वरन् जन-सहभागिता से परिपूर्ण एक राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम था। क्योंकि 1857 की क्रांति में जन-सहभागिता की शुरुआत कोतवाल धन सिंह गुर्जर के नेतृत्व में मेरठ की जनता ने की थी। अतः कोतवाल धन सिंह गुर्जर ही 1857 की क्रांति के जनक कहे जाते हैं।

इतिहास गवाह है कि, आज भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में महिलाएं पुरुषों से बहादुरी के मामले में, कंधा से कंधा लगाकर चलती हैं। अतः पुरुषों की बहादुरी की देखा देखी और अपने भाइयों की दुर्दशा को देखकर इस क्षेत्र की महिलाओं ने भी प्रण किया, कि हम भी देश से वफादारी के मामले में में किसी से पीछे नहीं रहेंगे। और इसी से प्रेरित होकर, 'कल्श्याण खाफ की महिलाओं ने सेना बना कर, 'आशा गुर्जर यानी कि आशा देवी गुजरी' के नेतृत्व में 13 और 14 मई को कैराना और शामली की तहसील पर हमला बोल दिया। 'क्योंकि कल्श्याण खाप के अंदर 84 गांव, चौहान गोत्र के गुजरों के हैं,'। इसलिए कैराना, शामली में खाप व अन्य सभी क्षेत्रीय गांव की महिलाओं को संगठित करके, आशा गुर्जर ने अंग्रेजों की सेना को ध्वस्त कर दिया। आशा गुर्जर और सहयोगी वीरांगनाओं ने, दो दिन और रात तक, अंग्रेजी सेना से भीषण युद्ध कर, आसपास के क्षेत्र में अपना दबदबा बना लिया। आजादी की लड़ाई में कल्श्याण खाप के सिर्फ सैनिकों का लड़ना ही काफी नहीं है, बल्कि समाज के हर तबके के लोगों को कंधा से कंधा मिलाकर जंगे आजादी में शामिल होना चाहिए। इस क्रांतिकारी सोच के तहत, गांव की इस साधारण सी महिला आशा देवी गुजरी ने महिलाओं को संगठित कर अपनी सेना बना ली। 1857 के संग्राम में आशा गुर्जर ने अंग्रेजों को काफी मुश्किलों में डाला। आशा गुर्जर के संगठन की ताकत का अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है, कि संगठन की 255 महिला सैनिकों की शहादत के बाद ही अंग्रेजी सेना आशा गुजरी को युद्ध भूमि में जिंदा पकड़ सकी थी। अन्य महिला सैनिकों के साथ बर्बर अंग्रेजों ने आशा गुर्जर को फांसी पर लटका दिया था। आशा देवी गुजरी का सहित साथ देने वाली वीरांगनाओं में :

शोभा देवी, देवी, भगवानी देवी, भगवती देवी, कुशल देवी, नाम कौर, राज कौर, इंदर कौर, हबीबा गुर्जरी, रहीमी गुर्जरी, महावीरी बाल्मीकि, रणवीरी बाल्मीकि, सहेजा बाल्मीकि, इत्यादि शामिल थीं। ये

वीरांगनाएं अंग्रेजी सेना के साथ लड़ते लड़ते शहीद हो गईं। अपनी बहादुरी से सोए हुए भारत में, शौर्य और पराक्रम का, आशा देवी गुजरी यानी कि आशा गुर्जर ने एक बार फिर नया संचार किया। इस क्रांति में अग्रणी भूमिका निभाने की सजा पांचली व अन्य ग्रामों के किसानों को मिली। मेरठ गजेटियर में वर्णन के अनुसार :

4 जुलाई 1857 को प्रातः 4:00 बजे, पांचली पर एक अंग्रेज रिसाले ने तोपों से हमला किया। रिसाले में 56 घुड़सवार, 38 पैदल सिपाही और 10 तोफची थे। पूरे ग्राम को तोप से उड़ा दिया गया। सैकड़ों किसान मारे गए, जो बच गए उनमें से 46 लोग कैद कर लिए गए, और इनमें से 40 को बाद में फांसी पर लटका दिया गया।

इन सभी वीरांगनाओं और शहीदों को शत शत नमन...
@ अब हम सभी लोग शहीदों के सम्मान में खड़े होकर 2 मिनट का मौन रखेंगे 😔

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

-:समाप्त:-

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.)
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
7355175480